द्वितीय अध्याय

कमलेश्वर की महानगरीय कहानियों का संक्षिप्त परिचय

अ ध्या य द्वि ती य

कमलेश्वर की महानगरीय कहानियों का संक्षिप्त परिचय ---

अपने शोध प्रबन्ध के विषय को अच्छि प्रकारसे स्पष्ट करने के लिए उनकी महानगर से संबंधित कहानियों का उल्लेख करना आवश्यक है। कमलेश्वर के सभी कहानी संग्रहों को पढने के पश्चात मुझे केवल उन्निस कहानियाँ ऐसी मिली हैं जो महानगरसे संबंधित हैं। इन कहानियों का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार से है।

कमलेश्वर की महानगरीय कहानियाँ --

कथा संग्रह - ` राजा निरबंसिया ` (१९५७) - दूसरा संस्करण - १९८२ -

(१) सुबह का सपना ---

` सुबह का सपना ` लेखक कमलेश्वर की आत्मकथात्मक शैली में लिखी हुई एक प्रसिध्द कहानी है, जिसमें कमलेश्वर जी ने मानव जीवन में शान्ति का होना कितना महत्वपुर्ण है, इस बात की ओर निर्देश किया है।

लेखक एक दिन अपने एक मित्र के साथ शहर में चली प्रदर्शनी देखने चले गये थे। वे अच्छितरह जानते थे कि, प्रदर्शनी या नुमायश वाकई एक जमघट होता है और उसमें वही जाने-पहचाने चेहरे और दिखाव्टी लापरवाही होती है। फिर भी मित्र के साथ वे चले गये। लेखक प्रदर्शनी में लगाये गये पुस्तक भंडार पर खडे थे कि उनके मित्र के शब्द सुनाई दिये ` वाह-वाह क्या चीज है। `

मित्र एक कलेण्डर देख रहे थे, जिसमें दो बच्चे सफेद कबूतर पकडे थे। उस तसवीर में ताजगी थी। नीचे लिखा था ` वी लव पीस `, ` हमें शान्ति प्यारी है `। सुनकर लेखक का मन भटक जाता है, क्योंकि शान्ति की बाते बहुत पुरानी हो गयी थी। इससे पहले लेखक ने जो पत्रिका उठायी थी उसे देखने लगे। पत्रिका में कई तसवीरें

थी। प्राकृतिक सौन्दर्य की, दुलहाते हुये खेतों की और आलीशान इमारतों की। उसके बाद वह तसवीरें जिनमें बारूद के धुए से बने बादल और उड़ते हुये हवाई जहाज, बमबारी से गीरी हुयी इमारतें और उजड़े हुये खेत को रौंदते हुये संगीनधारी सैनिक। पत्रिका बंद करने के बाद भी लेखक को वह युध्द की तसवीर बार-बार याद आ रही है। घमासान युध्द और सैनिकों की गीरी हुयी लाशों का ढेर।

वहाँ से चलने से पहले [illegible] ने तिरंगे के रूप में एक बहुत बड़ा गुब्बारा खरीदकर मित्र ने लेखक के हाथ में दे दिया और अपनी साइकिल पर बैठकर चले गये। लेखक गुब्बारे को सीनेपर रखकर उँगलियोंसे तुप..तुप की आवाज निकालते हुये घर की ओर चल पड़े। गुब्बारेसे किसी विषैली गैस की तरह बदबु आ रही थी। ये गुब्बारा ही इस कहानी में हाइड्रोजन बम का प्रतिक है। लेखक तुप..तुप की आवाज में खो गये। उस समय रात काफी जा चुकी थी। गुब्बारे से निकलती तुप..तुप की आवाज में लेखक खो गये और उन्होंने देखा उनके पड़ोस की बेबी और रानी ये दो छोटी लड़कियाँ गुड्डा-गुड्डी की शादी का खेल खेल रही हैं। मुँह में कागज की तुरही लगाकर और टिन के डिब्बेपर धागे लगाकर वह दोनों बैण्ड बजा रही हैं। फिर वही बाते कर रही हैं जो अक्सर शादी-ब्याह में की जाती है। आरोप प्रत्यारोप, और आखिर समझौता।

पर अचानक उनके बाजोंकी आवाज गड़गड़ाहट में बदल जाती है। धुँए के बादल चारों तरफ मँडराने लगे। दूर खड़ी फसलों को रौंदकर वरदीधारी, संगीने लगी बंदुके लिए खूँखार सिपाही जल्लादों की तरह अपनी लाल आँखे चमकाते एकाकार हो गये। वह सिर्फ एक सैनिक था। उसकी आँखों में ज्वालामुखी थी। वह जेकब साहब का लड़का था। जिधर किसी पक्षी की सरसराहट सुनाई पड़ती, उधर ही उसकी दृष्टि घूम जाती। आखिर उसकी दृष्टि एक जंगली कबूतर पर पड़ी। रानी और बेबी सकपकायीसी उसे देख रही थी। उन दोनों छोटी लड़कियों ने एक दुसरी की ओर संदेह भरी दृष्टिसे देखा। दोनों की नजर उस कबूतर पर ही थी और मन में उसे बचाने की उम्मिद।

तभी घर छूटोंकी आवाज हुयी। रानी खड़ी हुयी और कबूतर की तरफ देखकर बोली 'ढेला मार दो'। 'हाँ-हाँ मार दो', बेबी ने भी हामी भर दी और

रानी ने ढेला कबूतर की तरफ फेंक दिया । जेकब साहब का लड़का कबूतर पर अपना निशाना लगा रहा था । ढेले की आवाज से कबूतर सरसराहट की आवाज के साथ उड़ चला ।

रानी और बेबी ने तालियाँ बजाकर शोर मचाया । जेकब साहब का लड़का आग भरी नजरों से उनको देख रहा था । गुस्से से वह पागल हो गया था । उन्हे खामोश करने के लिए उसने हवा में फायर किया । सहमकर उन दोनों लड़कियों ने एक दुसरी को बाहो में कस लिया । अब उन्हे अपार साहस आ गया था ।

धमाके की गुँज के साथ सब दृश्य बदल गया । वह जलाद जेकब साहब का लड़का कही खो गया । धुँए के बादल उमड़े और सब शान्त हो गया ।

लेखक की नाक में विचित्र महक भर रही थी और साँसे तेज रफ्तार से चल रही थी । क्षणभर बाद उनकी आँखे खुली । देखा, वह सीने से लगा गुब्बारा फूट गया था । उसमें से बदबू आ रही थी । सोचकर लेखक मुसकराकर रह गये थे । उस समय सुबह होने को आयी थी ।

' हाइड्रोजन बम पर प्रतिबध की माँग । ' आज की ताजा खबर । '
- चिल्लाता हुआ अखबार वाला सड़क से गुजर रहा था ।

कहानी संग्रह -- ' बयान ' (१९८४)

(१) ' लाश ' --

यह राजनितीक पृष्ठभूमिपर लिखी गयी एक कहानी है । इस कहानी में सत्ताधारी और विरोधी दल के बीच सामान्य आदमी की किस प्रकार बली चढाई जाती है, इस बात की ओर संकेत किया है ।

इस कहानी में वर्णित शहर में हड़ताल होनेवाली थी । सारा शहर सजा हुआ था । मोर्चे की पुर्व तैय्यारी के रूप में सारा काम पहलेसेही शुरु था । मोर्चे के दिन कानुन और व्यवस्था बनाये रखने के लिए जगह-जगह सशस्त्र पुलिस तैनात कर दी थी । यह सब इंतजाम पुलिस कमिशनर ने खुद कर लिया था । अपने इस चोकस इंतजाम

की खबर देने के लिए कमिशनर जब मुख्यमंत्री के पास गया तो उसका तनाव खुदही खत्म हो गया। कितनी पुलिस फोर्स, किस तरह और कहा-कहा तैनात कर दी गयी हैं, कमिशनर बता जा रहा था, लेकिन मुख्यमंत्री और गृहमंत्री दोनों खामोश और हमेशा की तरह प्रसन्न मुद्रा में थे। वे दोनों यह जानते थे कि, कोई उधम नहीं मचेगा।

यह कमिशनर नया था। वह बार-बार मोर्चे की भयानकता के बारे में बता रहा था और मुख्यमंत्री कमिशनर के सामने विरोधी दल के नेता कान्तिलाल, जो इस मोर्चा के कर्ता-धर्ता थे उनकी तारीफ कर रहे थे। कमिश्नर सकुचाते हुये बोला -- ' मोर्चेवाले शायद आपका पुतला जलायेंगे। ' सुनकर मुख्यमंत्री बोले ' जलाने दीजिए, इससे आपका कानुन भंग नहीं होगा। '

आखीर चार बजे जुलूस निकला। मोर्चा काफि बडा था। देखकर सब चकित थे। देखकर विश्वास नहीं हो पा रहा था कि लोग अभी इतनी संख्या में जीवित हैं। स्थानिय और विदेशी अखबारों के फोटोग्राफर इस ऐतिहासिक मोर्चे को देखकर हैरान थे। सरकारी फिल्म डिवीजन का कैमरा भी इस अद्भुत दृष्य को अपनी फिल्मपर उतार रहा था। इस लंबे जुलूस को देखकर लगता था कि, कोई बहुत बडा अजगर धीरे धीरे आगे सरक रहा हो।

तभी अचानक जुलूस के अगले हिस्से में भगदड मच गयी। चारों तरफ बदहवासी भर गयी और जुलूस एक युध्द के रुप में बदल गया। धुएँ के बादल, तोडफोड की आवाजे, गोलीयों की आवाज और असंख्य चीखें। गिरते-पडते लोग इधर उधर भागने लगे। पर पता नहीं चला कि यह सब हुआ कैसे ? और क्यों ?

पुलिस ने घायलों को अस्पताल और ' दंगाईयों ' को शहर से दस मील दुर छोड दिया। इतना बडा हादसा होने के बावजुद सिर्फ एक लाश गिरी थी। लाश पर न गोली का निशाना था, न वह कहीं से घायल थी।

जब पुलिस ने लाश देखकर यह घोषित किया कि यह लाश कान्तिलाल की है, तब वे हैरान हो गये। कान्तिलाल ने लाश को देखा, और जोश से कहा ' यह मुख्यमंत्री की लाश है। '

इस भयावह घटना की जाँच-पड़ताल करने के लिए मुख्यमंत्री भी निकले थे। उन्होंने यह सुना तो घबराये से पहुँचे। उन्होंने गौर से देखा और मुस्कराते हुये बोले - ` यह मेरी नही है। `

(२) ` जोखिम `

` जोखिम ` यह सिर्फ एक कहानी ही नहीं बल्कि मानव जीवन का वह दर्पन है जो इन्सान की स्थिति का, उसकी तमाम समस्याओं, आशाओं का वास्तव रूप प्रतिबिम्बित करता है।

` जोखिम ` के नायक (मैं) को एक ऐसी राहत की जरुरत है, जिससे वह एक अच्छी जिन्दगी बसर कर सके। उसके आसपास सिवाय दु:खों और समस्याओं के कुछ भी नहीं है। वह चाहता है कि, उसे कोई ऐसा काम मिले जो कानुन की भाषा में ` काम ` हो। इसी चाहत ने उसे अपने शहर और बुढी माँ से अलग कर दिया था।

बम्बई में आकर उसने नौकरी-धन्दा पाने की बहुत कोशिश की, लेकिन हमेशा कोई न कोई दिक्कते उसके सामने आती रही थी।

इसी समय उसके मनमें उन तस्कर व्यापारीयों का ख्याल आता है, जो बम्बई के तटोंपर करोडों का माल इधर से उधर कर देते हैं। ये दुस्साहसी मल्लाह किसतरह अपना काम करके चले जाते हैं, यह देखने के लिए उसका मन लालायित था। अपना काफि समय बरबाद करने के बाद भी वह उन तस्करों को देख नहीं सका था। इतनी बडी बम्बई में भी उसे जीने की राह नही मिल रही थी। बेहद अकेले पन और निराशा में वह लोगों की हँसी खिलाखिलाहट और बेपरवाही, उनके चेहरों की निश्चितता देखकर सोचता कि इनके दु:ख कहा है ?

इस ` मैं ` ने बम्बई में आकर एक दुकान का पता अपनी माँ को दे रखा था। वही पर माँ के खत आते थे। अब के खत की लिखावट बदल गयी थी। जब लिखावट बदल जाती थी तो वह सोचता था कि, मुहल्ले का कोई चल बसा या फिर मुहल्ला छोडकर चला गया। इस बार जगन्नाथ पोष्टमन.मर गया था। वही माँ के खत लिपिबध्द करता था। पाँच बरस पहले के खत मास्टरजी लिखा करते थे।

उनकी लिखावट वाले खत में दोहरी खुशी ये थी कि, खत के आखीर में एक वाक्य माँ की तरफ से ही लिखवाया होता था --` अम्माजी कह रहीं है, जैसे ही हो लौट आओ। ` यह वाक्य मास्टरजी की लड़की पुनीता लिखती थी। यह एक वाक्य लिखते-लिखते एक अजीब सी जगह पुनीता ने उसके आस-पास बनाई थी। लेकिन अपनी हालात और तमाम मजबुरीयों में फँसे इस ` मैं ` को फुरसत कहा थी कि वह पुनीता को चाह सकें, उससे प्रेमालाप कर सके।

अपनी दिन-ब-दिन बगड़ती हालत और दोगली अर्थ व्यवस्था से जब वह तंग आता है, तब तन का धन्दा करनेवाली वेश्याओं को खुशनसीब समझता है। उसके पास वह साधन भी नहीं, है सिर्फ ठहराव। उसे मिलनेवाला कोई भी काम आठ-दस दिन से ज्यादा नहीं चलता था। इज्जत, सुविधा, मानसिक तृप्ति और माँ के ख्यालसे वह छटपटाता है।

एक दिन उसे माँ का खत आया था। वह बीमार है और मरने से पहले एक बार उसे देखना चाहती है लेकिन उन दुस्साहसी मल्लाहों को देखने की योजना के कारण माँ के पास नहीं जा सका था। तभी एक काम उसे मिला, जो सिर्फ सत्रह दिनों का था। वह काम खत्म होने के बाद उसे मुश्किल लग रहा था। एक बार कोई गलत काम करने से बार-बार उससे भी ज्यादा गलत काम लेने को वह मजबुर हो रहा था। उसकी राह प्रगति की ओर नहीं बल्कि अधोगति की ओर थी।

माँ का एक और खत आया और वह हारकर चला गया। माँ सचमुच बीमार थी। उसे लकवा लग चुका था। वह अंधी भी हो गयी थी। पाँच साल पहले जाते वक्त माँ ने उसे देखा था। मरने से पहले माँ उसे कुछ बताना चाहती थी। वैद्यजी के कुछ रुपये देने थे, माँ को किसी दान खातेसे मिलने वाले तीस रुपयों में उसका माहवार खर्चा नहीं चल रहा था, लेकिन माँ को कुछ समझाकर वह उसके दुःख और बढाना नहीं चाहता था।

माँ को बचाने की उसने बहुत कोशिश की, लेकिन बचने की कोई गुंजाईश नहीं थी। सिर्फ उसकी जाती हुयी जान देखते रहना बाकी था। लोग आते और इन्तजार करते रहने की सलाह देकर चले जाते। माँ की यह हालत देखकर वह अकेला

जीव सकपकाया, उसके होश उड गये । वह बेतरह परेशान हो गया था । उसके सामने अपने अंधे भविष्य और बर्बादी की तसीर मँडराने लगी । कब तक उन लोगों की दिक्कते खत्म हो जायेंगी ?? और कब उसके भविष्य का रास्ता खुला होगा ? यह सोचकर परेशानी में ही उसने वित्त मंत्री मोरारजी देसाई को खत लिखा कि वे आयें और मेरी माँ की हालत, मेरे आस-पास की परिस्थिति देखें, मैं बहुत परेशान हूँ । `

मंत्री जी आये, माँ की हालत देखकर दु:खी से बैठ गये । कुछ देर बाद बोले ` आपके पास सिर्फ शिकायतें हैं, मैं क्या कर सकता हूँ ? ` और उसकी समस्याओं को हल करने का कोई रास्ता न बता कर ही वे चले गये ।

वित्त मंत्री के जाने के बाद एक दिन उसकी माँ की देह पुरी तरह पथरा गयी । देखते ही लगता था जैसे पत्थर की मुरत । जिसने देखा तारीफ ही की । ऐसी शान्त मौत किसको मिलती है ? लोगों ने राय दी की इतनी अच्छी मूरत बरबाद न की जाए । अत: एक चौराहे पर चबूतरा बनाकर माँ को बैठा दिया गया । चौराहे पर वह मूरत बिलकुल जीती-जागती लगती थी ।

जब कभी वह शहर लौटता है, तो उसके पास पलभर रुक जाता है । माँ की आँखों की नीचे की वह मांस पेशी काँपती है और उसे देखने के लिए आँखे खोलने की कोशिश करती है । पर खोल नही पाती ।

(3) बयान --

` बयान ` कमलेश्वर की तीसरे दौर की प्रसिध्द और चर्चित कहानी है । प्रस्तुत कहानी में एक फोटोग्राफर की स्त्री का कोर्ट में दिया गया बयान रखा गया है । इस बयान में न्यायाधीश और वकील के कई प्रश्नों के उत्तर समाये हुये हैं । ठीक-ठीक उसी प्रकार आज की प्रस्थापित व्यवस्था से संबंधित अनेक प्रश्न भी उठाये गये हैं । इसलिए ` बयान ` में प्रश्न भी है और उत्तर भी ।

दिल्ली में एक फोटोग्राफर ने आत्महत्या की है । इस देश में वह अपराध है । अत: आत्महत्या के बाद कानूनी कार्रवाई शुरु हुयी । इस व्यक्ति की पत्नी को कानून के कटहरे में खडा कर दिया गया है । क्योंकि कानून की नजरों में वह पति

की आत्महत्या के लिए जिम्मेदार है। जब किसी भी प्रकार के प्रमाण नहीं मिल रहे हैं, तब खिंचा-तानी करके कानून उस स्त्री को दाँव-पेच में पकड़ने की कोशिश कर रहा है। उस स्त्री की व्यक्तिगत जिन्दगी का संपुर्ण इतिहास बार-बार दुहराया जा रहा है।

इस स्त्री का पति किसी सरकारी पत्रिका में फोटोग्राफर था। सरकारी नौकरी के दौरान घटी हुयी एक घटना उस की आत्महत्या का कारण है। थार के रेगिस्तान को रोकने के लिए केन्द्र सरकार ने लाखों-करोडों की योजनाये बनायी थी लेकिन वह सिर्फ कागज पर ही थी। संविधान अधिकारी तथा अन्य लोग इस योजना के रुपये अपनी जेबों में भर रहें थे। सरकारी फोटोग्राफर के नाते इसने उस रेगिस्तान की तसवीर खिंची, जहाँ जंगल ही न था। इससे जनता के सामने भ्रष्टाचार की तस्वीर आ गयी। सरकार तथा संबंधित मंत्री महोदय की खुब बदनामी हुयी। और इस सही तसबीर देने की गलती के परिणाम स्वरुप उसे नौकरी से हटा देने का निर्णय लिया गया। तबसे यह फोटोग्राफर परेशानी की स्थिति में जीने लगा। उसे कोई काम नहीं मिल रहा था। और उसी समय उस फोटोग्राफर की आँखों से पहली बार खुन के कतरे बहना शुरु हुआ। उसके बाद यह सिलसिला लगातार चलताही रहा। उसकी आँखे खुनसे लबालब भरी रहती। वह और उसकी स्त्री इस बात से इतने परेशान थे कि, वे सोच भी नहीं सकते थे कि अब क्या किया जाए ?

पति की नौकरी छुटने का दु:ख और उसकी आँखों से बहते खुन के कतरे, घर की खस्ता हालत, इन सभी बातों के बीच बच्ची का पैदा होना उन दोनों के लिए कुछ राहत की बात बन गयी। इन्ही दिनों उस औरत को मजबुरन एक स्कूल में नौकरी करनी पडी जो छुट्टियों में नौकरी से हटा दी जाती थी। ताकि छुट्टियों की पगार न देनी पडे। सही तसबीरों को गलत साबित करने के धक्के को वह फोटोग्राफर सहन नहीं कर सका। उसका विश्वास ही अपने काम पर से उठ गया था। इस भयावह आर्थिक परिस्थिति से तंग आकर उसने अपनी पत्नी की अधनंगी, उद्दिपक तसवीरें खिंचकर किसी सस्ती पत्रिका को बेच दी। यह तसबीरे छपकर आने के बाद तुरंत उस स्त्री को

नौकरी से हटा दिया गया। केवल जीने के लिए उसका यह निर्णय याने परिस्थिति के साथ समझौता नही,एक ईमानदार फोटोग्राफर की मौत मात्र थी।

प्रजातंत्रिय भारत में ईमानदारीसे जीनेवाले अथवा जीने की कोशिश करनेवाले पति-पत्नी की यह कहानी है। यह ` बयान ` वास्तव में राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियोंपर की गयी कटु परंतु खरी टिप्पणी है। प्रजातंत्रिय व्यवस्था की सही विडंबना याने यह ` बयान `। यह व्यवस्थाही सच्ची तसबीरे देने वाले के सभी आर्थिक आधार तोडकर उसे आत्महत्या के लिए मजबूर कर देती है।

(४) ` आसक्ति `

` आसक्ति ` बहन की आर्थिक व्यवस्थापर जीनेवाले एक भाई की कहानी है। सुजाता और विनोद भाई-बहन हैं। जिस बडे शहर के किसी कार्यालय में सुजाता नौकरी कर रही है , वह शहर दोनों के लिए अपरिचित है। जिस गली में वे रहते हैं, वहाँ एक ही कमरे में इन दोनों का रहना चर्चा का विषय बन जाता है। देर रात तक बातें करना,साथ-साथ रहना यह वहाँ के लोगों को अखरता है। लोग उनके भाई-बहन के रिश्ते को स्वीकार नहीं करते। यही पर रिश्तों का ढीलापन देखने को मिलता है।

विनोद बहन की कमाईपर जीने के लिए मानसिक रुपसे तैय्यार नहीं है, पर वह परिस्थिति से मजबूर है। सुजाता के भी अपने अलग दु:ख है। जवान और आकर्षक सुजाता को दफ्तर के पुरुष अक्सर तंग करते है। घर आकर विनोद के सम्मुख वह अपने इन दु:खों को कहती है,तो विनोद और परेशान हो जाता है। सुजाता दफ्तर में और विनोद पडोसियों से तंग आ चुके है। केवल वे जवान है, यही उनका अपराध। लोगों की इन परेशानीयों की वजह से विनोद सुजाता को ब्याह करने का आग्रह करता है। सुजाता भी शादी करके हमेशा के लिए इस प्रकार की निंदा को समाप्त करना चाहती है। परंतु विनोद की जिन्दगी का भी सवाल है।

विनोद उसे समझाता है कि,कब तक तुम मेरे लिए अपने को बाँधे रहोगी ? और फिर धीरे-धीरे सब कुछ बदल जाता है। सुजाता वीरेन्द्र के संपर्क में आ जाती

और यह संपर्क गहरा होकर शादी के रुप में बदल जाता है। विरेन्द्र का भी अपना कोई मकान न होने के कारण वह सुजाता के पास आता है। अब विनोद उन दोनों की सुविधानुसार अपनी जिन्दगी जीने की कोशिश करता है। अब कमरे में ही सोने वाला विनोद अपनी चारपाई लेकर बाहर गली में सड़कपर सो जाता है। विवाह से एक फायदे की बात हुयी -- पड़ोसियों के ताने बंद हो गये, लेकिन दुसरी और ये कहने लगे कि सुजाता विनोद की सगी बहन नहीं हो सकती। नहीं तो क्या वह इस तरह उसे सड़कपर सोने देती ? पहले घर में शान्ति और बाहर अपमान होता था। अब बाहर शान्ति और घर में अपमान हो रहा था। इस समय विनोद एक भयंकर अलगाव महसूस करता है। वह सोचता आखिर कहाँ तक वह बहन - बहनोई के आर्थिक आधारपर अपनी जिन्दगी बसर करेगा ?

हमेशा की तरह विनोद बाहर सड़कपर अपनी चार पाई पर सो रहा था कि, अचानक आकाश में चारों ओर बादल छाने लगे। बारिश शुरु हुयी सब लोग अपनी अपनी चारपाईयाँ लेकर घरों में चले गये, लेकिन बेचारा विनोद बारीश में भिगता हुआ ही खड़ा रहा। थोड़ी देर बाद वह उपर जाकर तीन-चार बार दरवाजा खटखटाता है, लेकिन वे दोनों गहरी नींद में सो रहे थे या बारीश के कारण उसकी आवाज सुनाई नहीं दी गयी होगी। रातभर चादर लपेटे वह अकड़ बैठा रहा। सुबह सुजाता ने देखा और प्यार तथा झल्लाटसे कहने लगी - हमें क्यों नहीं जगाया ? तुम तो बस्स् ऐसे ही हो, ` अच्छा चलो एक प्याली चाय पी लो, नहीं तो सर्दी लग जायेगी। ` और विनोद शायद चाय के साथ आँसू भी पी रहा था।

इस प्रकार संपूर्ण कहानी में विनोद के दुखों को उसकी कमजोरी या असहाय्यता को ,बेकारी के कारण उभरी हुयी उसकी मजबुरी को स्पष्ट किया है। विनोद उन बेकार युवकों का प्रतिनिधित्व करता है जो मजबूरी के कारण हारकर दुसरों के आश्रित बनकर रहते हैं।

सुजाता एक आम भारतीय युवती की मन:स्थिति को ही स्पष्ट करती है। वीरेन्द्र का ध्यान रखना उसके लिए स्वाभाविक है इसी कारण वह विनोद के साथ अनजाने में उपेक्षा का व्यवहार करती है।

५) 'उस रात वह मुझे ब्रीच कैण्डी पर मिली थी और ताज्जुब की बात यह कि दूसरी सुबह सूरज पश्चिम में निकला था।'

तीसरे दौर में लिखी गयी इस कहानी में कमलेश्वर जी ने कथ्य की अपेक्षा वातावरण को और वातावरणसे निर्मित मन:स्थिति को महत्व दिया है। इसी कारण यह कहानी 'अकहानी' के निकट चली जाती है। इस संपूर्ण कहानी में बम्बई के ब्रीच कैण्डी का चित्रण किया गया हैं। रात के सन्नाटे में समुद्र किनारे बैठकर पास ही खड़ी विशाल बिल्डिंगे, उनकी खिडकियाँ, लहरे और सन्नाटे को चीर कर जानेवाली कारें -- ये सारे एक अजीब वातावरण का निर्माण करते हैं। इसी वातावरण में कहानी का निवेदक बैठा है। हर जगह उसकी दृष्टि जाती है परंतु कहीं पर भी नहीं टिकती।

तभी अचानक एक टैक्सी समुद्र के किनारे आकर रुक गयी। टैक्सी रुकते ही उसमें से एक आदमी और एक औरत उतरी। समुद्र के किनारे एकदम अकेले में, इतनी रात के समय जहाँ न कोई मकान न होटल था, वहाँ उन दोनों का रुकना संशयास्पद था। वे दोनों किनारे पर पड़े एक बेंच पर बैठ गये। दोनों अपने में ही खोये चुपचाप बैठे थे। उनके थोडे ही दुर किनारे पर तीन नावें आ लगी। नावों में कुछ आदमी जलती हुयी स्टॅार्च लिये थे। आदमी और औरत मूर्तियों की तरह स्तब्ध हो गये। एक नाव में से किसी औरत की लाश उतारी जा रही थी। नाव से आये लोग खामोश पुतले की तरह यह काम कर रहे थे और बेंच पर बैठे ये दोनों अब भी शान्त और स्तब्ध थे।

आधी रात के समय समुद्र के किनारे का यह चित्र लेखक ने हु-ब-हु चित्रित किया है। बेंच पर बैठे उन दोनों की तटस्थता से निवेदक आश्चर्य चकित है। ये दोनों अपनी दुनिया में इस तरह खो गये हैं कि, उन्हे किसी भी बात का अहसास नहीं हो रहा है। उन्हें न बारीश का अहसास है, न भीगने का और न उन नावों

का जो उनके करीब आ लगी है। आदमी ` मौत ` जैसी घटना का नाम सुनते ही अपने मौन को तोडकर सतर्क बन जाता है। पर यहाँ उनके सामने एक लाश को उतारा जा रहा है, फिर भी वे दोनों खामोश और तटस्थ है। न उन्हें भय है और ना ही दु:ख। निवेदक उनकी गजब की तटस्थता से आश्चर्य चकित हो गया है। संभवत: इसी आश्चर्य के कारण कहानी को यह नाम दिया है -- ` उस रात वह मुझे बीच कैण्डी पर मिली थी और ताज्जुब की बात यह कि दूसरी सुबह सूरज पश्चिम में निकला था। `

इस शीर्षक की सार्थकता उस स्त्री और पुरुष की मन:स्थिति में ही हम देख सकते हैं स्त्रीयाँ अक्सर डरपोक और चौकस होने के बावजूद यह स्त्री निर्भयता तथा तटस्थतासे सामने एक लाश और वह भी एक स्त्री को देखकर न विचलित हुयी हैं, न उत्सुक।

इस बातसे यह स्पष्ट होता है कि, तटस्थता, निर्विकारता बम्बई महानगर की सबसे बडी विशेषता है। यहाँ के लोग सिर्फ अपने में ही डूबे हुये हैं और लाखों की भीड मे भी अकेले हैं।

६) ` मैं `

यह एक नाजुक किस्सा है, जो मेजबान द्वारा किसी ड्रिंक पार्टी में सुनाया गया था। मेजबान स्वयं ढाल रहे थे और मेहमान पी रहे थे। पार्टी गरम हो उठी थी और तब एक किस्से के जवाब में यह किस्सा मेजबान ने सुनाया था।

एक साहब ऐसी ही पार्टीसे पी कर लौटे थे। उन्हें उनके मित्र ने घर के सामने न उतारकर गली के मोडपर ही अपनी कार से छोड दिया। डगमगाते-लडखडाते वे अपने घर के सामने पहुँच गये। रात की गस्त पर निकला हुआ पुलिस गौरसे उन्हे वाच कर रहा था। अपने घर के दरवाजे के होल में चाबी लगाते समय हाथ से चाबी-गिर गयी। चाबी उठाकर फिर से दरवाजा खोलने की कोशिश करने लगे। पुलिस वाले को शक हुआ और उसने कहा ` जनाब ` अपने घर जाइएँ। `

लडखडाते हुये साहब बोले ` यही मेरा घर है। `` यही तुम्हारा घर है ,तो चाबी क्यों नहीं लग रही है ?` पुलिसवाले ने कहा।

` आप यकिन कीजिए यही मेरा घर हैं। साहब ने हरतरह कोशिश की,

लेकिन पुलिस को कुछ ज्यादाही शक होने लगा । यह साहब पुलिस को समझा रहे थे कि यही मेरा घर है और जैसे ही मैं दरवाजा खोलूँगा । मेरा ड्राइंगरूम सामने आयेगा । ड्राइंगरूम में बड़ा सोफा है, कोने में लैम्प है, और गौतम बुध्द की पीतल की मुर्ति है ।

जैसे ही दरवाजा खोला, साहब ने बताया हुआ सब कुछ घर में था । पुलिस वालेने कुछ सोचकर कहा ` यह तो हर ड्राइंगरूम में होता है । रात के तीन बजे कुछ हंगामा न करने की वजहसे साहब ने फिर कहा कि ` मेरी स्टडी देखकर आप यकिन कर सकते हैं । स्टडी में किताबों की अलमारियाँ हैं, मेरा कब्बर्ड है,मेज पर फाइले हैं और दिवार पर पेंटिंग लटकी हुयी है । स्टडी में सब चीजे साहब के कहने के मुताबिक होने के बाद भी पुलिसवाला बोला ` यह भी सभी की स्टडी में होता है और अब पुलिसवाला दिवार पर लगाई हुयी पेंटिंग के बारमें पुछने लगा कि, वह किसकी है ? कहाँ से लायी गयी है ? साहब को उस वक्त याद नहीं था । तब पुलिस वाला ही कहता है कि, जयपुर महाराजा के महलसे चुरायी गयी पेंटिंग है या दिल्ली म्यूजियम ` से चुरायी गयी है ।

अब साहब बहुत परेशान होकर बोले कि आइए मैं आपको सबसे बडा सबुत देता हूँ कि यही मेरा घर है ।

` कौनसा सबुत ? पुलिस वाले ने कहा ।

उन्होंने अपने बेडरूम का दरवाजा खोलकर लाईट ऑन कर दी,और गहरी नींद में सोयी हुयी अपनी पत्नी की ओर इशारा करके बोले यह मेरी बीवी है ।

पुलिस वालेने गौरसे देखकर पुछा -` पर बिस्तरपर यह दुसरा आदमी कौन है ?

` वह मैं हूँ, यकिन कीजिए वह मैं हूँ । ` साहबने कहा और लाइट आफ कर दी ।

७) ` <u>अपना एकांत</u> `

` अपना एकांत ` जी उदास कर देने वाली एक कहानी हैं । इसका परिवेश, इसमें घटित सारी घटनाएँ और निवेदक के जरिए बताई गयी सारी बातें पाठक के मनमें एक अजीबसी कसक पैदा कर देती है ।

बम्बई की चौपाटी चाहे ज्वार हो या भाट । किसतरह सदा-सुहागिन होती है ? आकाश में चमकते चाँद के कारण समुद्र के पानी पर बना हुआ चाँदी का रास्ता । इमारतों की बाँहों में घिरी पानी और रेत की इस छोटीसी दुनिया का सुंदर चित्रण लेखकने कहानी के निवेदक द्वारा किया है ।

` अपना एकांत ` इस कहानी में लेखक ने सोम और हंसा के मधुर संबंध जो उत्तेजना रहित और ठंडी आग की तरह थे । इस बात की ओर निर्देश किया है । वे कैसे एक दुसरे से परिचित हुये और उनके एक दुसरे के करीब आने का क्या कारण था इसका कोई पता नहीं था । हंसा बम्बई की और सोम लखनऊ का था ।

मलबार हिल के गुलमोहर के पेड़ों के नीचे सोम खड़ा था, और हंसा अपनी सहेलियों के साथ वही पर खड़ी थी । बस । यही पर उनकी पहली मुलाकात हुयी थी ।

इसके दो-तीन महीने बाद वह चौपाटीपर उसे मिली थी । तब हंसा के साथ उसका पुरा परिवार था । इस समय बारिश हो रही थी । बारिश के रुकने पर वे लोग चले गये थे और सोम उल्टी पड़ी नाव पर बैठ गया था ।

उसके कई महीनों बाद सोम एक कालिज की लायब्ररी में कुछ दिनों के लिए लगा था, तब हंसा से अचानक मिलना हुआ था । हंसा लेक्चरर हो सकती है, यह सोचकर सोम को आश्चर्य हुआ था । छुट्टी पर गये आदमी के लौटने पर सोम छूट गया था पर दोनों का परिचय बना रहा । वे पंद्रह बीस दिन बाद मिलते थे, बस मिलना, सिर्फ एक मिलना ही था । न जिन्दगी के कोई वादे न प्रेमालाप । हंसा जब सोम को मिलने आती तो मंगलसूत्र उतार कर आती थी । शायद वह छुपाना चाहती थी कि, उसकी शादी हुयी है, लेकिन इसका कोई कारण भी नही था । सोम उसका पति नही था । वह उसका पुरुष भी नही था । सोम जैसे उसका एक अंश था । मानो सोम हंसा का अपना एकांत ही था, जिसके बिना रहना बड़ा मुश्किल होता है ।

हंसा को जब मालुम हुआ कि, सोम नहीं रहा तब वह काफी उद्वेलित हो उठी थी लेकिन उसने कुछ खास जाहिर नहीं किया था । सिर्फ इतना ही कहा था कि, ` शायद अब मैं पढा नहीं पाऊँगी । ` सोम के न रहने और हंसा के पढा न

सकने का क्या संबंध था, वह समझमें नहीं आता था। सोम और हंसा के बीच एक खास बात और थी कि सोम चलते समय हंसा के पास उसकी बेणी मांग लेता था। बस, इस बेणी के अलावा उसने हंसा के पास कुछ नहीं मांगा था इसलिए हंसा अब कभी बेणी नहीं लगायेगी।

सोम बहुत परेशान था और एक अपरिचित की तरह जीना चाहता था। यश और लगातार मागते रहनेवाली जिन्दगीसे उबकर वह सीधी और मामुली जिन्दगी ही जीना चाहता था।

इस कहानी में सोम के मर जाने की घटना बड़ीही दु:खद है। सोम एक कार के नीचे आगया था और कारवाला उसे घायलही छोड़कर भाग गया था। बड़ी देर वह वही पड़ा कराहता रहा। लोगोंने थानें में खबर कर दी, लेकिन काफी देर तक कोई नहीं आया। फिर सोम खुद ही लँगड़ता हुआ पुलिस थाने पहुँच गया।

पुलिस थानेपर भी किसीने उसकी दखल नही ली, तो वह बुरी तरह घायल स्वयं ही बम्बई अस्पताल गया। ताज्जुब की बात यह थी कि, इतना जादा घायल जिसकी चार पसलियाँ टूटकर अलग हुयी थी और पैर की हड्डी टूटी थी, वह खुद चलकर आया था, और इससे भी आश्चर्य की बात यह थी कि वह बेहोश था।

समयपर सोम का इलाज नहीं हो सका और वही पर वह मर गया था। रिश्तेदारों का कोई पता न लगने के कारण उसकी लाश को लावारिस घोषित किया गया।

इसके बाद सोम की लाश का स्वयं उठकर शवदाह घर में जाना, अपना नाम बताकर अपनी अंतिम क्रिया के लिए आग्रह करना और खुद जाकर दाहघर (फर्नेस) में जाने वाली ट्रॉली में लेटना यह सारी बाते आज की कार्यपध्दति और जरुरी कामों में होने वाली देरी पर व्यंग्य करती है। सोम जब जीवित था तब उसने किसीसे कुछ लेने देने की आशा नहीं की थी, लेकिन उसके मर जाने के बाद भी लोगों को इतना समय नहीं था कि, उसका क्रियाकर्म औरों की तरह कर दें। कोई भी आदमी अपना समय बर्बाद करके मुसिबत में फँसना नहीं चाहता और बम्बई जैसे महानगर में यह बात आमतौरपर दिखाई देती है। सभी अपने अपने काम में लगे रहते हैं। अपने आस-पास की कोई भी घटना वहाँ के लोगों को विचलित नहीं करती

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

सोम का दुःखद अंत इसी महानगरीय विशेषता का परिणाम है। महानगरों में व्याप्त यह तटस्थता और एकाकी पण की भावना आदमी को आदमी से दूर कर देती है।

८) ` अजनबी `

` अजनबी ` यह अपना गाँव छोड़कर बम्बई में काम की तलाश करने वाले उन लोगों की कहानी है जो आदमीयों के समुंदर में आकर भी ` अजनबी ` बनकर रहते हैं। इस कहानी का अजनबी ऐसे ही लोगों का प्रतिनिधी है।

कोई बतरा नाम का आदमी जो एक आर्कीटेक्ट के यहाँ काम करता है और उसके दोस्त का दोस्त है, उसी बतरा ने उसको काम के वास्ते बम्बई बुलाया था लेकिन बतरा कहा रहता है और उसका काम कहाँ कहाँ पर चालू है यह उसको मालुम नहीं था। उसने खत में भी नहीं लिखा था। सिर्फ यही लिखा था कि चले आओ। और खत में बैक-बे-रिक्लेमेशन का पता दिया था। इतने अधुरे पतेपर बतरा को खोजना उसे बहुत ही मुश्किल लग रहा था।

दो-तीन आदमीयों को पूछने के बाद वह वहाँ कुछ बनती हुयी इमारतों के नजदीक पहुँचा। वहाँ आठ-नौ इमारतें बन रही थी। आर्कीटेक्टों के बोर्ड पढ़ने के बाद भी उसे यह मालुम नहीं हुआ कि बतरा का काम कहाँ पर शुरु है।

हारकर वह उस अंधेरे द्वीप से निकलकर खुली जगह में आ जाता है, और एक नारियल पीकर फिर बतरा का ठिकाना ढूंढने लगता है। कुछ दूरी पर उसे मजदूरों की झोपड़ियाँ नजर आती हैं। झोपड़ियों में जलती हुयी किरासिन की बत्तियाँ देखकर उसे कुछ राहत मिलती है। एक झोपडी में जाकर वह बतरा का ठिकाना पुछता है, लेकिन झोपडी में रहने वाले मजदूर और उसकी स्त्री को बतरा नामका कोई आदमी मालुम नहीं है। वे दोनो उसे सुबहतक रुकने को कहकर अपने काम में लगे रहते है। उन्हें उसकी परेशानी की कोई फिक्र नहीं है। वह इस बात से परेशान हो रहा है कि, अगर बतरा नहीं मिला तो सुबह तक वह कहाँ रहेगा और रात कैसे बितायेगा।

वे दोनों मजदूर-मजदूरिन उसके साथ इधर उधर की बातें करते रहे। वह उन्हे पुछ रहा था कि ये किसकी इमारत है, इसमें क्या बनने वाला है। लेकिन मजदूरों को क्या मालुम कि इमारते बनने के बाद उसमें होटल बनता है या अस्पताल ? वे सिर्फ इतना ही जानते थे कि यहाँ सिर्फ बिल्डिंग बनती है।

' बतरा इधर किसी अखबार बनवाने वाली प्रेस की इमारत का ठेकेदार है। यह सुनकर वह मजदूरिन कहती है कि पेपर उधर बोरीबंदर पर निकलता है।

बात यही तक सीमित रही। क्योंकि,उन दोनों को इससे ज्यादा कुछ मालुम भी नहीं था। वे उसकी बात समझ नहीं पा रहे थे। आखिर में उन्होने उसे कहा -- ' तुम इधर सो जाओ। सबेरे बातरासाब को देखना। '

इस तरह बतरा साहब से न मिलने का दु:ख सीने में दबाकर वह आसमान में लगे तारे देखता पड़ा रहा और वे दोनों गहरी नींद में सो रहे थे और समुद्र की अनवरत आवाज में उनके खर्राटों की आवाज मिल रही थी।

कहानी संग्रह - ' खोयी हुई दिशाएँ - ' (१९८६ दुसरा संस्करण)

---

(१) ' खोयी हुई दिशाएँ '

यह कहानी राजधानी दिल्ली की है और अपना छोटासा शहर छोड़कर दिल्ली में रहनेवाले एक जीव की है, जिसका नाम चन्दर है। चन्दर के उस छोटेसे शहर में गंगा के सुनसान किनारे पर भी अगर कोई अनजान मिल जाता तो उसकी नजरों में पहचान की झलक होती थी।

पर इस दिल्ली में तमाम सड़के हैं, घर हैं, बस्तियाँ हैं, उनमे रहने वाले लोग हैं। पर सब अनजान,पहचान और अपनेपन से दूर। चन्दर यहाँ इसी अपनेपन के लिए छटपटाता है। दिन भर फिरनेसे थकान भरी देह लेकर जब वह अपने घर जाता है, तब अपनी पत्नी के साथ प्यार के दो-चार पल भी बीता नहीं सकता। क्यों कि. बेकार की बाते करने के लिए आई हुयी पड़ोस की कोई न कोइ होगी। वह बहुत कुछ सोचता है -- घर जाकर पत्नीसे कहें कि और वह प्यार से पास आकर थकान दूर करने की कोशिश क नहीं कभी।

चंदर के आस-पास रहने वाले लोग भी एक तरह से जिन्दा-मुर्दों की तरह है। उन सभी लोगों में एक अजीब सा बेगानापन है। किसी को किसीपर भरोसा नहीं। कोई किसी के दु:ख से दु:खी नही होता और सुख से सुखी नही। बस अपनी ही धून में जैसे दुनीयाँ में उनके सिवा किसी का अस्तित्व उन्हें मंजूर ही नही है।

चन्दर काम के सिलसिले में जहाँ भी जायेगा वहाँ उसे यही नजर आता है। चेक कैश कराना और घर मनीऑर्डर भेजना है, पर काउण्टर पर इलाहाबाद वाला अमरनाथ नहीं है जो फौरन चेक और रुपया ला दे। डाकखाने में मनीऑर्डर के फॉर्म लिये कई लोग खड़े होंगे, उनमें से कोई भी उसे पहचानता नहीं होगा।

कॅनॉट प्लेस के खुले हुये लॉन में जब कभी चन्दर जाता है तब भी वही चित्र वह देखता है। लॉन में एकाध बच्चे इधर-उधर दौड़ते हैं। बच्चों की शरारतें और शकले चन्दर खुब पहचानता है,लेकिन उन बच्चों की माँ ये अजनबी हैं, क्योंकि उनकी आँखों में ममता नहीं, उनके शरीर में मातृत्व का सौन्दर्य नहीं, सिर्फ एक खुमार है। यह सब देखने के बजाए वह तनहा खड़े पेड़ों के बीच अँधेरे खालीपन की तनहाई पसंद करेगा। क्योंकि उसे तनहाई में भी अपनापन महसूस होता है।

टी-हाउस में चाय पीते चन्दर को आनन्द दिखाई देता है। चन्दर उससे मिलना नहीं चाहता क्योंकि आनन्द की बातों में अजीबसा बनावटी पन है। इस बनावटी पन के कारण चन्दर अपने से मिलने को भी कतराता है। टी-हाउस में चलें बेपनाह शोर और खोखली हँसी,मेजों पर बैठे लोगों की ,जो साथ साथ आकर भी बिना ताल्लुक की नजरें। यह सब देखकर उसका मन भारी हो जाता है। अकेलेपन का नागपाश और भी कस जाता है।

चन्दर वहाँसे बाहर आकर बस स्टॉप की ओर बढता है। नीचे पीले पत्ते पड़े हुये हैं, जिनकी चुरमुराने की आवाज उसे कई साल पिछे ले जाती है। ऐसेही पीले पत्तोंपर वह इन्द्रा के साथ चल रहा था। तब चन्दर इन्द्रा से प्यार करता था। उसकी याद में वह खो जाता है और यह भी भूल जाता है कि, वह बस-स्टॉप पर खड़ा है।

इन्द्रा अभी दिल्ली में ही है। चन्दर जब भी उसे मिलता है। उसकी आँखों

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

में वह चार बरस पहले पहचान पाता है। इन्द्रा चन्दर की सारी आदतें जानती है। चन्दर को इस अनजानी और बिन जान-पहचान से भरी नगरी में इन्द्रा इतने सालों के बाद भी पहचान ली है, अब तक जानती है। इस बातसे उसे राहत मिलती है और इन्द्रा को मिलने की इच्छासे एक फटफट पर बैठकर इन्द्रा के घर जाता है। फटफट पर बैठने से पहले यह सरदारजी फटफटवाला चंदर की ओर पहचान की नजरों से देखता है पर चंदर जब उतरकर एक चवन्नी सरदार को देता है तब अचानक सरदारजी अनजान बनकर दो आने और माँगता है। बात दो आने की नहीं थी, लेकिन चन्दर को परायेपन और मतलबी दुनिया का फिर एक बार अहसास होता है।

इन्द्रा उसे मिली। पर इन्द्रा की बातों में छिपी वह मेहमानबाजी देखकर चन्दर वहाँसे दूर भागना चाहता है और अपना सिर किसी दिवार पर पटक देने तक सोचता है।

आखिर वह थका हारा घर पहुँचता है, निर्मला, उसकी पत्नी उसे देखकर प्यार से पुछती है 'बहुत थक गये।' और तभी चन्दर महसूस करता है कि, यही सब मेरा है। यह घर, घर की सारी चीजें, सामने पड़े हुये कपड़े और उनका गंध वह पहचानता है। उसका तनहा मन सभी तनहाइयों को छोड़कर उन परिचित गंध, साँसो और स्पर्शों में डूब जाता है। उसे लगता है वह अजनबी और तनहा नही है। अपनी पत्नी को पास लेकर वह उसे टटोलता है और अपार सुख पाता है। पत्नी की बाहों में उसके तन की गरमाहट बढ़ती है रन्ध्र-रन्ध्र में एकता का सागर लहराने लगता है।

कुछ देर बाद निर्मला करवट बदल पड़ी रहती है। चन्दर उसे फिर अपने हाथों से टटोलता है। पर निर्मला शायद गहरी नींद में सो रही थी। उसका प्रतिसाद न पाकर चन्दर सोचता है, वह उसके स्पर्श को नहीं पहचानती। झकझोर कर वह निर्मीला को उठाता है और पुछता है 'निर्मला तुम मुझे पहचानती हो ? तुम मुझे पहचानती हो ?'

२) ' जौर्ज पंचम की नाक '

यह बात उस समय की है जब इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ अपने पति के साथ हिन्दुस्तान का शाही दौरा करने वाली थी। बड़ी धुम-धाम के साथ रानी का स्वागत करने की बातें होने लगी। और देखते - देखते नयी दिल्ली का कायापालट होने लगा।

लेकिन एक बात बड़ी मुश्किल थी -- राज पथ पर इण्डिया गेट के पास वाली जौर्ज पंचम की लाट के नाक नहीं थी। नयी दिल्ली में सब कुछ था ... सिर्फ नाक नहीं थी।

इस नाक की एक लंबी कहानी थी। काफी बहसे हुयी थी कि जौर्ज पंचम की नाक रहने दी जाये या हटा दी जाए। लेकिन अचानक यह हादसा हुआ कि जौर्ज पंचम की लाट की नाक गायब हो गयी। रानी आये और नाक न हो। मीटिंगे, मशवरे हुये और तय किया गया कि किसी भी तरह नाक लगनी चाहिए।

मुर्तिकार को बुलाया गया। उसे जौर्ज पंचम की लाट की किस्म का पत्थर ढूँढकर लाने की इजाजत दी गयी। मुर्तिकार ने हिन्दुस्तान का कोना-कोना छान मारा पर कहीं भी उसे उसी तरह का पत्थर नहीं मिला। जौर्ज की लाट का पत्थर विदेशी था। मुर्तिकार ने एक बात और कहीं कि, देश में अपने नेताओं की किसी लाट की नाक निकालकर जौर्ज की लाट को लग सकती है। इजाजत मिल गयी।

फिर मुर्तिकार देश दौरे पर निकला। जौर्ज पंचम की खोई हुयी नाक का नाप उसके पास था। उसने सभी शहरों में जाकर नेताओं के बुत की नाके नापी और खाली हाथ वापस आ गया। सब नाके जौर्ज की नाक से लंबी निकली।

सब हताश हो गये। लेकिन मुर्तिकार हार माननेवाला नहीं था। वह पैसे से लाचार था। उसने एक और तरकिब सोची कि, चालीस करोड में से कोई एक जिन्दा नाक काटकर लगा दी जाए।

कानाफुसी हुयी और इजाजत दे दी गयी। जौर्ज की लाट पर ताजा पानी डाला गया, ताकि, जो जिन्दा नाक लगायी जानेवाली है वह सुखने न पाये। इधर रानी के आने का दिन नजदिक आ रहा था।

और एक दिन जौर्ज पंचम की लाट के नाक लग गई। जिन्दा नाक, जो

कतई पत्थर की नहीं लगती ।

लेकिन ताज्जुब की बात यही थी कि, उस दिन अखबार में किसी उद्घाटन, कोई सार्वजनिक सभा या किसी को कोई मानपत्र देने की खबरें नही छपी थी । किसी हवाई अड्डे या स्टेशन पर किसी का स्वागत समारोह नहीं हुआ था । पता नहीं ऐसा क्यों हुआ था ? नाक तो सिर्फ एक चाहिए थी और वह भी एक बुत के लिए ।

३) दिल्ली में एक मौत --

इस कहानी में लेखक कमलेश्वर जी ने किसी की मौत के समय मातमपुरसी के लिए जाने वाले लोगों का बडा ही व्यंग्यपुर्ण चित्रण किया है । ये लोग मय्यत को इसतरह जा रहे हैं जैसे किसी शादी या पार्टी में जा रहे हों ।

सेठ दिवानचन्द्र नाम के एक भले आदमी की मौत होती है । यह खबर अखबार में भी छपी है । कहानी में वर्णित इस बिल्डिंग में अतुल मवानी, सरदारजी, मिस्टर और मिसेज वासवानी और कहानी के निवेदक रहते हैं । उन सब के अलग अलग कमरे हैं । अतुल मवानी और सरदारजी और कुछ पैमाने पर वासवानी परिवार का ही सेठ दिवानचंद से संबंध था ।

उस मौत वाले दिन सुबह नौ बजे तक पुरी दिल्ली धुंध में लिपटी हुयी थी और सख्त सर्दी भी थी । ऐसे में अगर अरथी में जाना पडे तो .. इसी चिन्ता में निवेदक अपने कमरे में अखबार पढ रहा था । तब अतुल मवानी आयरन माँगने आ जाता है । उसे बहुत चिन्ता थी कि अतुल मय्यत में जाने के लिए बुलाने आयेगा । तुरंत मवानी को आयरन देकर वह निश्चिंत हो जाता है । उसे हर क्षण इस बात का खटका लगा था कि कोई आकर इतनी बडी सर्दी में शव के साथ जाने की बात न कह दे ।

अतुल मवानी का सूट को आयरन करना, सरदारजी का नाश्ते के लिए मख्खन मँगवाना और मिसेज वासवानी अबतक गाऊनपर ही खडी देखकर उसको लगता है कि अगर ये लोग अरथी के साथ नहीं जा रहे हैं, तो उसका सवाल ही नही उठता ।

मिसेज वासवानी नीली साडी पहन रही है और वासवानी टाई की नौट ठीक कर रहें है । सरदारजी का नौकर उनका सूट साफ करके हैंगर पर लगा रहा है । अतुल मवानी ने इंग्लिश लायनिंग का नया सूट पहन रखा है । जैसे यह सब लोग

किसी की शादी में शारिक होने निकल रहे हैं। निवेदक को अबतक मालुम नहीं है कि, ये लोग कहाँ चलने को कह रहें हैं। वह खड़ा-खड़ा सोच रहा है कि कमसे कम मुझे तो दिवानचन्द की अरथी के साथ जाना चाहिए था। क्योंकि उनके लड़के से उसकी अच्छी जान-पहचान थी।

उन चारों के जाने के बाद अचानक वह ओवरकोट पहनकर अरथी में शामील हो जाता है। चार आदमी कंधा दिये हुये और सात आदमी साथ चल रहे हैं। चलते-चलते वह सोचता है कि आदमी के मरने के बाद कितना फर्क पड़ता है। पिछले साल जब इसी सेठ दिवानचन्द ने लड़की की शादी की थी तो हजारों की भीड थी। लेकिन आज ?

आखिर अरथी पंचकुइयाँ स्मशान-भूमि में पहुँच जाती है। अरथी को एक चबूतरे पर रख दिया गया है। इधर उधर बिखरी हुयी भीड अब शव के पास जमा हो गयी और लोग फूल और मालाएँ उसके इर्द-गिर्द रखते जा रहें हैं। एक औरत कोट की जबेसे रुमाल निकालकर सुरसुराने लगती है और यह देखकर सभी औरतों ने सिसकियाँ भरना शुरु कर दिया है।

स्मशान-भूमि में उसे अपने बिल्डिंग के सभी लोग मिलते हैं। वे सजधज कर आये देख वह भी सोचता है कि अगर मैं भी तैयुयार होकर आया होता तो यहीं से सीधा कामपर निकल जाता। उसकी समझ में नही आ रहा था कि दफ्तर जाये या एक मौत का बहाना बनाकर छुट्टी ले लें।

४) 'एक थी विमला'

यह दिल्ली में रहनेवाली चार लड़कियों की कहानी है। ये चारों लड़कियाँ एक दुसरी को नहीं जानती और जानने-पहचानने का कोई सवाल भी नहीं उठता। क्योंकि ये दिल्ली है। दिल्ली में रहने वाले लोगों को इतनी फुरसत कहाँ मिलती है कि वे एक दुसरे को जाने।

इन चार लड़कियों के नाम - पहले मकान में रहने वाली विमला, दुसरे मकान में रहनेवाली कुन्ती, तीसरे मकान में रहने वाली लज्जावती और चौथे मकान में रहने - वाली सुनीता हैं।

A
10583

पहले मकान में रहनेवाली विमला बहुत ही शालीन और सज्जन युवती है। उसका बाप दिवानचन्द किसी प्राईव्हेट फर्म में काम करता है। विमला अपने घर की खस्ता हालत जानती है। उसका बाप यह चाहता है कि उसकी पढाई खत्म हो जाने के बाद किसी अच्छे नौजवानसे उसकी शादी करेगा। लडकी अच्छे घर में जायेगी और सुख की जिन्दगी बितायेगी। विमला की ओर उसके पडोस में रहने वाले हर नौजवान की आँखे लगी रहती हैं, लेकिन वह है कि, किसी की ओर एक नजर तक नहीं उठाती। सब लोग उसके रुप, गुण और शालीनता की प्रशंसा करते हैं।

विमला की तरह हजारों लडकियां हैं, उतनी ही सुंदर, सुशील और समझदार। वे सभी अपने घर की खस्ता हालत से परिचित हैं। वे सभी चाहती हैं कि सब लोग उनकी इज्जत करें और उनकी वजहसे उनके बाप-भाईयों की नाक ऊँची रहें। विमला भी यही चाहती है, और उसके सभी सपनें साकार हो जाने की आशा है।

दुसरे घर में रहने वाली कुन्ती अपने बाप के मरने के बाद घर का खर्चा और देखभाल स्वयं ही करती है। कुन्ती, विमला जैसी ही सुशील और समझदार लडकी है। कुन्ती के बारे में उसके बाप के मनमें वहीं तमन्नाएँ थी, जो विमला के बारे में उसके बापके मनमें थी।

कुन्ती के घर के पास ही बलवन्तराय सर्राफ की दुकान है, बलवन्तराय पुरानी चीजें खरीदता है और नई बीकता है। उसकी और कुन्ती की जान-पहचान एक दुकानदार और ग्राहक तक ही सीमित है। वह कुन्ती को मन ही मन बहुत चाहता है, लेकिन कुन्ती है कि, उसकी मुस्कराहट और नम्रता की तरफ ध्यान ही नहीं देती। घर की खस्ता हालत में वह कभी सोने की माला बेचने उसके दुकान में जाती है, कभी पुराने बर्तन।

जब घरमें बिकने लायक कुछ भी नहीं बचा तब कुन्ती बलवंतराय की दुकानपर जाती है क्योंकि उसे बीस रुपये की सख्त जरुरत थी। कुन्ती की एक मुस्कराहट के लिए तडपने वाले बलवंतराय ने कुन्ती को मुसकराते हुये देखकर स्वयं को भाग्यवान समझते हुये तुरंत बीस रुपये दे दिये।

कुन्ती ने अपनी सभी मुसकराहटें किसी खुबसूरत दिन के लिए संजोकर रखी थी, लेकिन उसकी मजबूरीने बेवक्त उसे वह सारी मुसकराहटें और सपने बिखर ने को मजबूर कर दिया।

तीसरे मकान में रहने वाली लज्जा दिखने में तो विमला और कुन्ती जैसी ही है, पर उसे जिसने देखा है हँसते-मुसकराते हुये ही देखा है। वह किसी बडे होटल मे रिसेप्शनिस्ट है। उसके घर में सब खुश है, किसी बात की उन्हे कमी नहीं है। लेकिन लज्जा के बारे में लोगों में हमेशा कानाफुसी होती रहती है। लोग उसे बदचलन कहते हैं क्योंकि वह हमेशा कार या टेक्सी से आती है।

लज्जा अधिकतर तीन आदमीयों के साथ दिखाई देती है, उनमे दिलीप नामका कोई युवक है। लज्जा उसे चाहती है, और उससे शादी करना चाहती है, लेकिन दिलीप शादी के लिए तैय्यार नहीं है। वह शायद लज्जा को गलत समझाता हो।

हर लडकी की तरह लज्जा भी यही चाहती है कि उसे कोई ऐसा आदमी मिलें जो सिर्फ उसे चाह सके, लेकिन लज्जा का वह रास्ता पहले ही कट चुका है।

चौथे मकान मे रहने वाली सुनीता में उन तीनों की खास तौर पर विमला की धुँधली-सी आकृती नजर आती है। वह एक नौकरानी के साथ अकेली रहती है। उसकी उम्र विमला या लज्जा से थोडी ज्यादा या कम होगी। पर अकेलेपन ने उसे काफी बदल दिया है। वह एक नर्सिंग होम में काम करती है। सुनीता की चारों ओर वीरानापन है और इसी कारण वह हर वक्त परेशान रहती है। मरीजों की सेवा करने के बाद भी उसे राहत नहीं मिलती।

सुनीता की शादी विनयमोहन नाम के किसी आदमीसे हो गयी थी, लेकिन तीन साल के अंदर ही उन्होंने तलाक ले ली थी। तबसे वह बेबस और मजबूरी की जिन्दगी जी रही थी। वह इस बेहद अकेलेपनसे छूटकर भाग जाना चाहती है। सुनीता को अपनी जिन्दगी डबलरोटी देने वाले लँगडे आदमी की तरह लँगडी लगती है और वह जिन्दगी से और भी ऊब जाती है।

५) <u>एक रुकी हुयी जिन्दगी --</u>

'एक रुकी हुयी जिंदगी' कमलेश्वर जी की लिखी हुयी एक सुंदर कहानी

है, जिसमें उन्होंने अपना गाँव, शहर छोड़कर दिल्ली में आये हुये लोगों को किन-किन मुसिबतों का सामना करना पड़ता है और किस तरह जिन्दगी बीतानी पड़ती है ? इसका वास्तव चित्र उपस्थित किया है।

नौकरी के लिए आये हुये एक आदमी को करीब दस साल बाद अपना एक परिचित आदमी दिल्ली में मिल जाता है। उसका नाम चमन है। देश के बँटवारे के समय चमन और वह एक ही छोटेसे शहर में रहते थे। वही पर उन दोनों की जान-पहचान हुयी थी।

इतने सालों बाद आज भी उसे चमन और उसकी पत्नी सतवन्ती याद है। सतवन्ती निहायत खुबसूरत और अच्छी थी। चाँदनी चौक में चमन की घड़ियों की दूकान है। दुकान छोटीसी जगह में होने के कारण लोग घड़ी खरीदने या मरम्मत करने नहीं आते। चमन को इस बात का दुःख है। वे दोनों इधर-उधर की बाते करते हैं और चमन के घर चलते हैं।

वे दोनों घर पहुँचते हैं। घर क्या,एक कमरा था। चमन चाय बनाने के लिए स्टोव जलाने लगा और यह उसका बिन पहचाना कमरा देखने लगा। सिर्फ एक घड़ी जो दिवार पर लटक रही थी, उसे वह पहचानता था। घड़ी को देखतेही उसे लगा कि, सतवन्ती अभी आयेगी और अपनी आदत के अनुसार वह चटखनी बटन खोलने और बंद करने लगेगी। गौर से देखने के बाद उसे मालुम हुआ कि घड़ी बंद है और उसमें सवा आठ बजे है।

उसने चमन को पूछा ' भाभी कहाँ गयी हुयी है ? ' चमन ने कहा ' सतवन्ती को गुजरे चार साल हुये ' ' रात को सवा आठ बजे थे। ' यह सुनकर उसे बहुत दुःख हुआ। चमन जो कुछ लाता उसमें सतवन्ती गुजारा कर लेती थी। अब चमन के लिए जिन्दगी बहुत भारी पड रही थी। वह बहुत दुःखी और उदास होता था कभी-कभी।

जिस दफ्तर में वह काम करता था, चमन वहाँ जाकर घड़ियों को बेचता था। चमन कभी महीने भर बाद आता था और कभी पँद्रहदिन बाद। धीरे-धीरे दफ्तर में घड़ियों की बिक्री वाली बात फैल गयी और किसीने पुलिस में खबर कर दी। चमन गिरफ्तार हुआ।

चमन को उसके इस दोस्त ने काफी कोशिशों के बाद जमानतपर छुडा लाया। चमन ने मैजिस्ट्रेट के सामने घडियों की बिक्री किस प्रकार और क्यों की ? सब बता दिया। घडियों की रसिदें,कैश मेमो और सेलस्टेक्स के कागजात पेश किये। उसने कोई बेईमानी नहीं की। सिर्फ अपना माल बिक जाने के लिए उसे स्मगल्ड बताकर दफ्तरों में जाकर बिक्री की थी, क्योंकि स्मगल्ड कहने से माल जल्दी खप जाता है। चमन को बेदाग छोड दिया गया।

चमन इस तरह अपना माल बेचकर इस बेबस जिन्दगीका नक्शा बदलना चाहता था। यहाँ दिल्ली में आये बहुत दिन हुये पर कुछ भी नही बन पाया था। वह दिल्ली की इस पागल कर देनेवाली दौड में स्वयं तेज रफ्तार से दौडना चाहता था। इसलिए मजबूरी में यह तरीका अख्तियार कर अपना सारा माल बेचना चाहता था।

लेकिन उस दिवार घडी की तरह उसकी जिन्दगी भी रुकी हुयी थी।

६) 'पराया शहर'

यह कहानी सुखबीर की है, जो पंद्रह साल दिल्ली में रहने के बाद भी दिल्ली को अपना नहीं कह सकता। उसके मन में कभी यह बात नही उठती कि यह दिल्ली उसकी है। इस महानगरी में रहने वाला कोई भी यह नहीं कहता। सब अपने अपने शहर ,गाँव या कस्बे की बात करते हैं। सबकी नजर में इस शहर के बारे में एक अजनबी-पन की एक झलक होती हैं।

सुखबीर को होली के दिन यह सब याद आता है। उसके पुरखे कभी गाँव में रहते थे। फिर तहसील जैसे अधकचरे शहर से उनका पहला संबंध था। सुखबीर का पिता दुर्गादयाल उसी शहर में पैदा हुआ था और वहीं पर उसने अपना नाम कमाया था। यह सब याद करते समय उसका मन घबराता है और उसके सामने तमाम दृष्य घूम जाते हैं, जिनका संबंध माँ की मौत के बाद के समय से हैं। सगे-संबंधियों,घरवालों, रिश्तेदारों, उन सबके पास कुछ ऐसा है जिसे वे अपना कह सकते हैं। बडी तकलीफ के साथ उसे अपने उस शहर का ख्याल आता है जहाँ वह पैदा हुआ था।

और जब उसे अपने बाप की याद आती है, उसके कानों में यह आवाज

आती है --` है कोई माई का लाल जो जमानत दे दे।` घर को पुलिस ने घेरा डाला था और बाप ऊपर खड़ा चिल्ला रहा था। उसके बापने भगाकर लाई हुई लड़की ही उसके वारण्ट का कारण बनी थी। उस लड़की से उसके बापने शादी की और तभी से सुखबीर के लिए वह घर और शहर पराया हो गया था।

सुखबीर ने बापसे रिश्ता खत्म कर दिया था और उन्ही मानसिक यातनाओं से छुटकारा पाने के लिए वह बाहर भागा था। उसका बाप ढलती उम्र में भी चढ़ी नदी की तरह बह रहा था। उसके सारे सुख उस लायी हुयी औरत के इर्द-गिर्द ही जमा थे।

सौतोली माँ के मरने के बाद सुखबीर अपने बाप को अपने यहाँ दिल्ली आने को लिखता है, लेकिन बापने जवाब दिया था कि पराये शहर में उसका मन नहीं लगता, यहाँ अपने लोग हैं। वह पराये शहर में आकर क्या करेगा ?

ममता टूटती नहीं। इतना सब होने के बाद भी सुखबीर कुछ पैसे उसे माहवार भेजता है। जवाब में उसके खत आते। खत देखकर सुखबीर का मन भर आता है। वह फिर एक बार उसे अपने साथ ले आने की कोशिश करता है। लेकिन बाप के करतूत उसके दिल में नफरतही पैदा कर देते हैं। उसने माहवार रुपये भेजना भी अब बंद कर दिया। लेकिन अब इतने बरस बाद सुखबीर अपने बापसे मिलने चल पड़ा, अब उसका भी मन पराये शहर से ऊब गया था।

दुर्गादयाल दो दिन कहीं बाहर गया हुआ था। आने के बाद जब वह सुखबीर से मिलता है, उसकी आँखे भर आती हैं। वह कहता है ` अब मुझे भी इस शहर से नफरत हो रही है। सब कुछ बीत गया है। अब दो-दो,चार-चार पैसे के लिए लोग पराये बन रहे है जो कभी अपने थे अब परेशान कर रहें है।`

सुखबीर ने कहा -` तो चलो मेरे साथ दिल्ली चलो, शहर तो वह भी पराया है, फिर भी .... `

` इस परायेपन का निस्तार कहीं नहीं` कहकर उसने सुखबीर को बिदा किया था। और सुखबीर वापस नौकरी पर चला आया था। उसे लगा था कि दुनिया में

हर आदमी के दो ही शहर होते हैं -- एक वह जहाँ वह रह पैदा हुआ है और जहाँ उसका कोई रहता है और दुसरा वह जहाँ वह अपनी रोजी के लिए जाता है और जिन्दगी गँवा देता है। और सचमुच सुखबीर स्वयं जिसमें रहता है, नौकरी करता है वह शहर अबतक उसके लिए पराया है।

कहानी संग्रह -- ` मांस का दरिया `

(१) ` युध्द `

यह कहानी उस समय की है, जब शास्त्री जी हिन्दुस्तान के प्रधान मंत्री थे, और भारत-पाकिस्तान के बिच घमासान युध्द जारी था।

लोग चायघरों, होटलो में रेडियो पर समाचार सुन रहे हैं। हर जगह युध्द का चर्चा है। दिल्ली अँधेरे में डुबी हुयी है। चारों तरफ अँधियारा और सन्नाटा व्याप्त है।

वह रेलिंग से लगा खडा घर से आये हुये खत के बारे में सोच रहा है। जबतक लडाई का खतरा है तब तक दिल्ली छोडकर घर वापस आने को कहा है। लेकिन उसका मन नही कर रहा है। एक साल दिल्ली में आने के बाद भी वह कुछ भी नहीं कर पाया है। पैर जमाने की बहुत कोशिश की है, लेकिन वह जाये कहाँ ? और कौनसा शहर है जो उसे पनाह दे सकता है ?

अँधेरे में लोग बातें कर रहे हैं। कैनॉट प्लेस की तबाही लाशों के ढेर और न जाने क्या... क्या।

जबर्दस्त हंगामा और सन्नाते हुये माहौल के बावजुद वह बिना डर के यूँही चला जा रहा है। इस समय जितने पैसे उसके पास हैं उनमें वह अपने शहर तक पहुँच सकता है। अगर दो दिन भी उसने देर कर दी तो वह पैसे भी खत्म हो जायेंगे। और कहीं से पैसे मिलना भी मुश्किल हो गया है। इतने दिनों में उसने दिल्ली में कुछ भी हासिल न करने की खीज उसके मन में उत्पन्न होती है और वह थॉम्पसन रोड के अपने कमरे में आता है।

जब वह घर जाने की बात सोचता है, तब उसके मन में आता है कि अडोस-

पडोस वाले यहीं कहेंगे कि, बमबारी के डर से भाग गया है और घरवाले भी शायद यहीं सोचेंगे। भूख और बेकारी से जो नहीं भागा वह बमबारी से भाग जाये ....

एन.सी.सी.के जमाने की पुरानी खाकी वर्दी पहनकर वह स्टेशन पहुँचता है। रह-रह कर उसके मन में एकही बात उठती है कि आखिर घर जाकर वह करेगा क्या ? टिकट लेकर वह खामोश खडी गाडी में बैठ जाता है। प्लेटफॉर्म पर इधर-उधर फौजी सन्तरी बंदुके लिये खडे हैं।

सिरहाने टीन का बक्सा लगाकर वह गाडी में लेट जाता है। भूख और बेकारी उसे घर वापस ले जा रही है या बमबारी ? एक साल में वह खुद के लिए एक कमीज तक नहीं सिलवा पाया था ... तरह तरह की बाते ध्यान में आती हैं। और सुबह जब आँख खुलती है तब अपने उपर पडी हुयी चादर देखकर उसे आश्चर्य होता है।

तभी सामने वाले आदमी ने उसे सिगरेट देते हुये पुछा था ` कहाँसे आ रहे हैं ? ` ` छुट्टी आये हैं ? ` बदनपर एन.सी.सी.की खाकी वर्दी देखकर वह आदमी उसे फौजी समझा बैठा था।

लेकिन सिर्फ ` जी हाँ ` कहने के सिवाय वह कुछ भी कह नहीं सका था। तभी उस क्षण के लिए उसने अपने बदन पर सैकडो घाव महसूस किये थे।

(२) ` मांस का दरिया `

` मांस का दरिया ` एक प्रसिध्द और चर्चित कहानी है, जो वेश्याओं के वास्तविक जीवन पर प्रकाश डालती है।

जुगनू एक वेश्या है। उसके साथवाली और पेशेवालियों की तरह उसे भी एक दिन डॉक्टरी जाँच के लिए हाजिर होना पडा था। तब डॉक्टरनी ने कहा था कि कोई पेशीदा मर्ज तो नहीं है पर तपेदिक के आसार जरुर है। पर जुगनू की खाँसी बढती ही जा रही थी। अम्मा उसे अस्पताल ले जाकर दिखा आयी थी। एक दिन तो जुगनू ने खून थूका था, तब उसकी एक हमजोली ने शोर मचाया था ... दूर भेजने की बात कही थी और ये भी कहा था कि जुगनू के कारण ... को मरना पडेगा।

जुगनू को बहुत बुरा लगा था। अम्मा ने उसे अपनी सेहत की खातिर कहीं और जाने की सलाह दी थी। अम्मा की बातों में अपनापन था, पर जुगनू की समझ में नहीं आता था कि वह कहां चली जायें। आखिर हार कर वह तपेदिक-अस्पताल में भरती हो गयी थी। अम्मा का दिया और अपने पास का सारा पैसा चार महीने में खत्म हो गया था। इस बीच वह दो-चार बार अम्मा के पास आई थी। अम्मा की आंखों में अपनापन देखकर उसे बहुत बड़ी राहत मिलती।

उसकी उफनती जवानी में उसके पास आने वाले मनसू किरानी, कँवरजीत होटलवाला, सन्तराम फिटर इन लोगों से उसने अस्पताल (सेनेटोरियम) जाते समय कुछ रुपये लिये थे। सन्तराम फिटर ने रुपये तो दिये थे लेकिन एक रात सूदमें कहकर गंदा मजाक भी उसके साथ किया था। मदनलाल नाम का एक आदमी जो सिर्फ अकेला उसके साथ हमेशा शराफत से पेश आता था, उससे भी जुगनू ने तीस रुपये लिये थे। अपने दिल पर पत्थर रखकर उसने मदनलालसे पैसे लिये थे।

वहाँसे लौटने के बाद वह स्वयं को बहुत ही कमजोर महसूस करती थी। खाँसी के कारण अब उसका बदन उतना झोल नहीं पाता था। आमदनी भी पहले जैसी नहीं थी। ऐसे समय वह बहुतही घबरा जाती थी। यह दिन-दिन टूटता हुआ शरीर और सामने पहाडसी खडी जिन्दगी।

जाँघ के जोड पर निकले फोडे के कारण जुगनू बेहद परेशान थी। जर्राह ने बताया था कि फोडा पकने में और दोचार दिन लगेंगे। बे मन से सिंगार कर के वह गाहक के इन्तजार में बैठ जाती थी।

बारजेपर बैठकर जब वह सोच में डूब जाती तो यह बेसहारा जिन्दगी सामने फैल जाती। आखिर क्या होगा ? दाने-दाने को मोहताज होना पडेगा और मस्जिद के सामने बुर्का पहनकर अल्ला के नाम पर हाथ फैलाकर बैठना होगा ... जी बहुत घबराता है और वह जहर खाने या डूब मरने की सोचती है।

कई मरद आये और चले गये लेकिन कोई ऐसा नहीं मिला जो जिन्दगी भर साथ दे।

एक बार मदनलाल आया था। उसे देखकर वह घबरा गयी थी। उसे लगा कि मदनलाल नगद माँगने ही आया है। लेकिन मदनलाल जुगनू के लिए आया था। फोडे

के कारण उसे बहुत तकलीफ हो रही थी तब वह चला गया था। थोड़ी ही देर बाद कँवरजीत आया था। उसे देखकर जुगनू को लगा कोई पराया घर में घुस आया है। फोड़े की तकलीफ और उसकी परेशानी का कोई दु:ख उसे नहीं था। ` जरा सी भी तकलीफ नहीं होने दूँगा ` कहकर वह खाटपर लेट ही गया। जुगनू बहुत ही बेबस हो गयी थी। उसने कँवरजीत को रोकने की कोशिश की ; लेकिन शैतान बना वह उसकी टाँगे दबाकर हावी हो गया था।

चीख कर वह बेहोश हो गयी थी। फोड़ा फूट गया था। जाँघ फटे हुये फोड़े के मवाद से - भरी हुयी थी और कँवरजीत ध्यान रखना, चौथी बारी हुयी ` कहकर निकल गया था।

(३) ` दु:खों के रास्ते `

यह कहानी बलराज नाम के एक अभागे आदमी की है, जो अपनी पत्नी की नफरत और बच्चों के प्रेम के बीच बुरी तरह पीटा हुआ है। अबोध बच्चों का प्रेम उसे ललिता से अलग नहीं होने देता और ललिता का उसके साथ दुर्व्यवहार, उन सबके पास आने नहीं देता।

उसकी पत्नी ललिता यहाँ बम्बई में है। वह नौकरी करती है, और बच्चे सुनीता और संजीव उसके पास हैं। बलराज नौकरी के लिए दिल्ली में है। बलराज के होते हुये ललिता वीरेन्द्र नाम के एक आदमी से प्रेम करती है और पति-पत्नी की तरह एक साथ रहते हैं। वह बलराजसे नफरत करती है।

यह सब जानते हुये भी बलराज उन मासूम बच्चों के लिए सब सहन करता है, और उन खोई हुयी खुशियों के लिए फिर एक बार बम्बई आकर ललिता को हर तरह मनाने की कोशिश करता है। लेकिन वह कुछ भी हासिल नहीं कर पाता। ललिता जाने अनजाने उसे तलाक देने पर मजबूर करती है। उसके रोम-रोम में बलराज के प्रति नफरत भरी हुयी है। बलराज हमेशा बहुत परेशान रहता था। उसे लगता कि, ललिता को कहे .. ` ललिता मुझे उसी तरह प्यार करो, यह सब मुझसे नहीं सहा जायेगा। ` वह बहुत ही घबरा जाता था । विराना उसे चारों ओर से घेर जाता था।

एक बार वह वीरेन्द्र से सब साफ-साफ बता देता है कि ललिता उसकी पत्नी के रुपमें जानी जाये और संबंध वीरेन्द्र से रखे, यह उसे कतई पसंद नहीं है। इसलिए वह खुद उन दोनों से अलग हटेगा और उन्हे विधिवत शादी करने का रास्ता खुला हो जायेगा।

उपरसे तो यह ठीक है, लेकिन मनही मन बलराज बहुत दु:खी है। ललिता ने उसके साथ विश्वासघात किया है उसके होते हुये ललिता ने वीरेन्द्र के साथ व्यभिचार किया है। दु:ख और क्रोध से भरा हुआ उसका मन वह विश्वास जो कभी उन दोनों के बीच था, उसे खोजने की कोशिश करता है। पिछले ढाई वर्षों से वह इस वस्तुस्थिति के पत्थर पर सिर पटक रहा है। उसे विश्वास था कि एक दिन सब ठीक हो जायेगा, यह टूटा हुआ जीवन फिरसे जुड जायेगा। उसके लिए न सही उन अबोध बच्चों के लिए ही सही। उसे लगता था कि उन बच्चों की जिन्दगियाँ इस आग में न झुलसे और इसी कारण वह सब कुछ सहता जाता है।

ललिता उसे घर बुलाकर भी उसका अस्तित्व मानने को तैय्यार नही है, फिर वह क्या करेगा ? इतना परायापन तो दो अपरिचितों में भी नहीं होता।

आखिर उन दोनों का तलाक हो गया और ललिता ने वीरेन्द्र के साथ कोर्ट में शादी की थी। उन दोनों की शादी से बलराज मुक्ति का अनुभव करता है। उसका विश्वास टूट जाता है और वह महसूस करता है कि ललिता से दुर जाने के बाद भी वह किसीका प्यार प्राप्त नहीं कर सकेगा। उसके अन्दर की भावनात्मकता मर चुकी थी और इसके बाद वह कही भी जुड नहीं सकेगा। उसके सामने कोई रास्ता नही रह जाता। उसके लिए सिर्फ दु:ख और तकलिफ, यातना और बर्बादी के सिवा कुछ नहीं रह जाता है।

(४) 'दिल्ली में एक और मौत'

'आज आसमान साफ है। सडकोंपर न धुंध है न धूल। दूर-दूर तक सब साफ दिखाई दे रहा है। युध्द विराम हो जाने के कारण दिल्ली बहुत गम्भीर है। दूर सडक पर एक अरथी इसी तरफ आ रही है। मिस्टर और मिसेज वासवानी, अतुल भवानी और सरदारजी अपने अपने कामों में मशगुल है।

अरथी कुछ आगे आ गयी है। ट्रंजिस्टर से आवाज आ रही है `प्रधान मंत्री शास्त्रीजी ने चेतावनी दी है कि,'पाकिस्तान ने फिर हथियारों का सहारा लिया, तो हम हथियार का जवाब हथियार से देंगे ....।'

अरथी गुरुद्वारे के पास रुकी हुयी है। चारों तरफ सन्नाटा है। अरथीपर सिवाय फूलों के और कुछ नजर नहीं आता। स्कूटर,कारें या बसें मृतक के सम्मान पर पलभर रुक जाती हैं और फिर गुजर जाती हैं।

अतुल भवानी गौरसे उधर देखकर कहता है, कि,शायद उसी मेजर की अरथी है जो युध्द में घायल होकर यहाँ अस्पताल में आया था। अखबार में उसके न रहने की खबर आयी है।

अरथी श्मशान की तरफ मुड गयी है। श्मशान के बाहर मिलिटरी अफसरों की कुछ कारें और जवानों के ट्रक खड़े हैं। लोग आपस में बोल रहे हैं -- `इसका नाम मेजर भूपिन्दर सिंह ... तीन बच्चे हैं और उम्र सैंतीस साल थी. अस्पताल में शास्त्रीजी जब इसे मिलने आये थे तब उसने कहा था,` प्रधान मंत्री खुद मेरे पास आये हैं और मैं लेटा हुआ हूँ, ये बेअदबी मैं कर रहा हूँ।`

शव लकड़ियों पर रख दिया गया है। चिता में आग लगाते ही` लास्ट पोस्ट ` ने सलामी दी है। उसी की रेजिमेन्ट का कर्नल फूट-फूट कर रो रहा है। औरतों की भीड से दबी हुयी सिसकियाँ आ रही हैं। मृत योध्दा का वृध्द पिता अपनी सूजी आँखोंसे कर्नल की पीठ पर अपना हाथ रखे कह रहा हैं सबर करो और मुझे देखो बेटे ... और वह खुद रो पड़ता है।

मृत योध्दा के बच्चे चुपचाप खड़े हैं। उनके होंठ और पलकें कुचली हुयी तितली के परों की तरह पड़फड़ा रहे है।

इकट्ठी हुयी भीड धीरे-धीरे अलग हो गयी है। कुछ लोग श्मशान की चहार दिवारी पर चुपचाप बैठे हुये हैं।

..